दादा भगवान परिवार का

अगस्त-२०२२

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

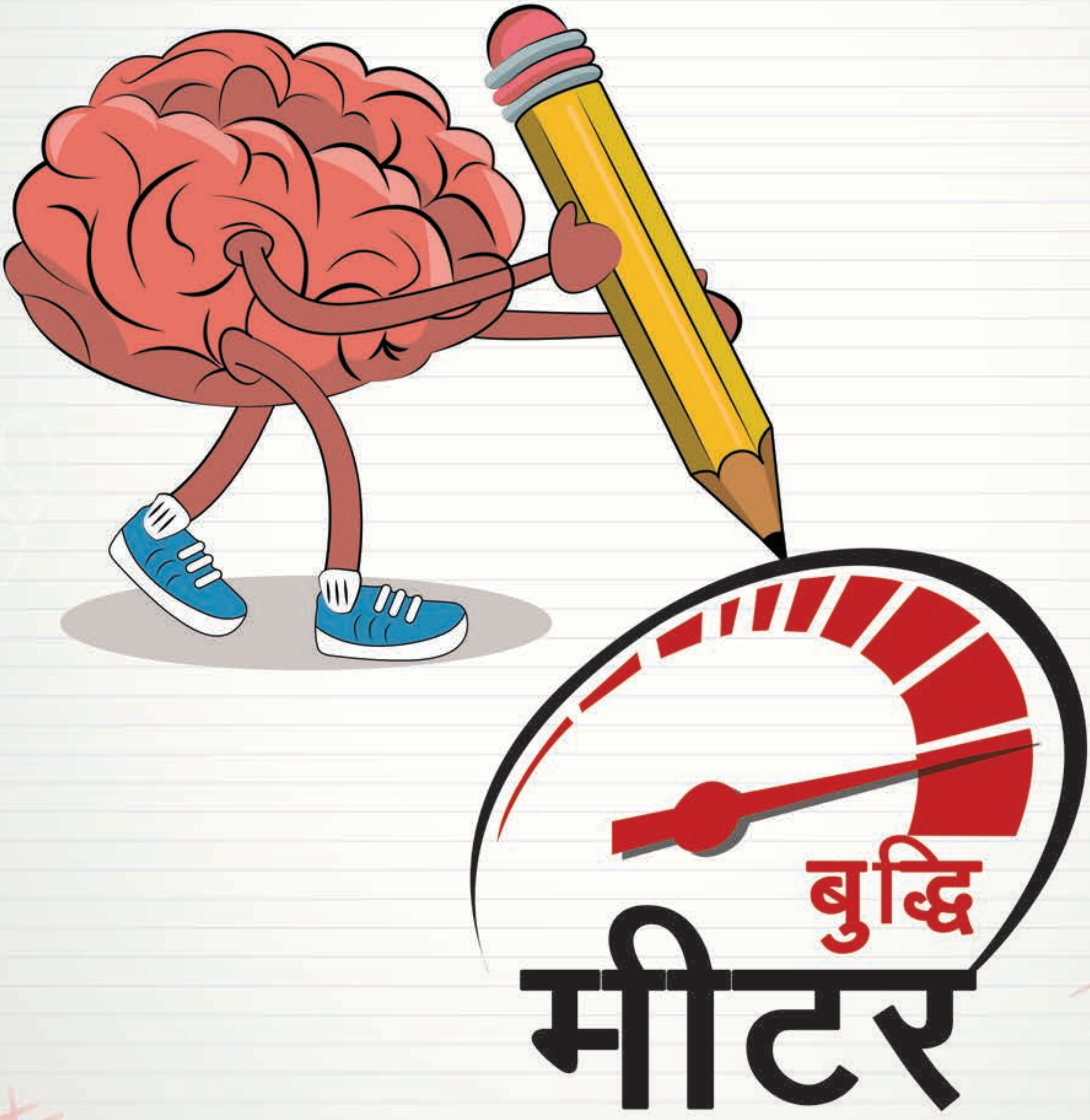

संपादकीय

बालमित्रों,

'इतना मेरा और इतना तुम्हारा।'

'तुम मेरी चीज़ों को हाथ मत लगाना और मैं तुम्हारी चीज़ों को हाथ नहीं लगाऊँगा।'

'लास्ट टाइम तुमने मेरी हेल्प नहीं की थी, तो मैं तुम्हारी हेल्प क्यों करूँ?'

ऐसा हमारे साथ भी बहुत बार हुआ होगा, सच है न? जानते हो ये 'मेरा-तेरा' कौन करवाता है? संकुचित बुद्धि! संकुचित बुद्धि का अपोज़िट क्या होता है? विशाल बुद्धि! जिनके पास विशाल बुद्धि होती है, उसे 'मेरा-तेरा' नहीं होता। उनके लिए तो सब 'हमारा' ही होता है।

तो चलो, इस अंक में 'संकुचित बुद्धि' और 'विशाल बुद्धि' के फंक्शन समझकर अपनी बुद्धि को विशाल बनाएँ है।

- डिम्पल मेहता

बुद्धि मीटर

वर्ष : १० अंक: ६
अखंड क्रमांक: ११४
सितंबर- २०२२

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

संकुचित बुद्धि और विशाल बुद्धि अर्थात् क्या?

संकुचित बुद्धि	विशाल बुद्धि
कम्पैरिज़न करता है, 'देखो, इसके पास ये चीज़ है। मुझे मिल जाए तो अच्छा।'	इस चीज़ से तुम्हें खुशी मिलती है न, तो तुम यह अपने पास रखो। तुम इसका उपयोग करो।
दूसरों का हड़प लेता है।	दूसरों की खुशी के लिए अपना सुख छोड़ देता है।
तुम दुःखी हो, जियो या मरो मुझे उससे कोई लेना-देना नहीं। मुझे अपना सुख भोग लेना है।	किसी को दुःख या परेशानी नहीं होने देता। मैं दुःख सह लूँगा लेकिन तुम्हें तकलीफ नहीं होने दूँगा।
वह दुःखी हो तो हर्ज़ नहीं, पर मुझे सुख मिलना चाहिए।	अपना सर्वस्व दूसरों के लिए खर्च कर दें।
पिछली बार उसने मुझे हेल्प नहीं की थी। इस बार उसके यहाँ जाना ही नहीं है।	खुद दस बार हेल्प करता है। खुद को जरूरत होने पर सामने वाला हेल्प न करे फिर भी उसे जरूरत पड़ने पर उसकी हेल्प करता है।

दादा के हृदय की विशालता

दादा ने सारी जिंदगी अपना सुख दूसरों को दे दिया। दादा कहते, "मुझे सुख न मिले तो कोई बात नहीं लेकिन आप सबको सुख मिलना चाहिए। मेरे सुख के लिए मैंने कभी सोचा ही नहीं, पूरी जिंदगी नहीं सोचा। और मुझे कभी दुःख मिला नहीं। क्योंकि दूसरों के लिए जीने वाले को कभी दुःख होता होगा!?"

एक व्यक्ति ने दादा के साथ आठ-दस बार गलत किया। फिर भी समय आने पर दादा ने उनको हेल्प ही की। तब दादा के मित्रों ने उनसे पूछा, 'ऐसा भी कभी होता होगा? जिस व्यक्ति ने आपका नुकसान किया, आप उसकी हेल्प कर रहे हो?' तब दादा ने कहा, "जो नुकसान करता है उसी की हेल्प करनी चाहिए, और किसकी हेल्प करनी चाहिए? जो नुकसान करता है, वह व्यक्ति बहुत दुःखी होता है। उसकी हेल्प ही करनी चाहिए।"

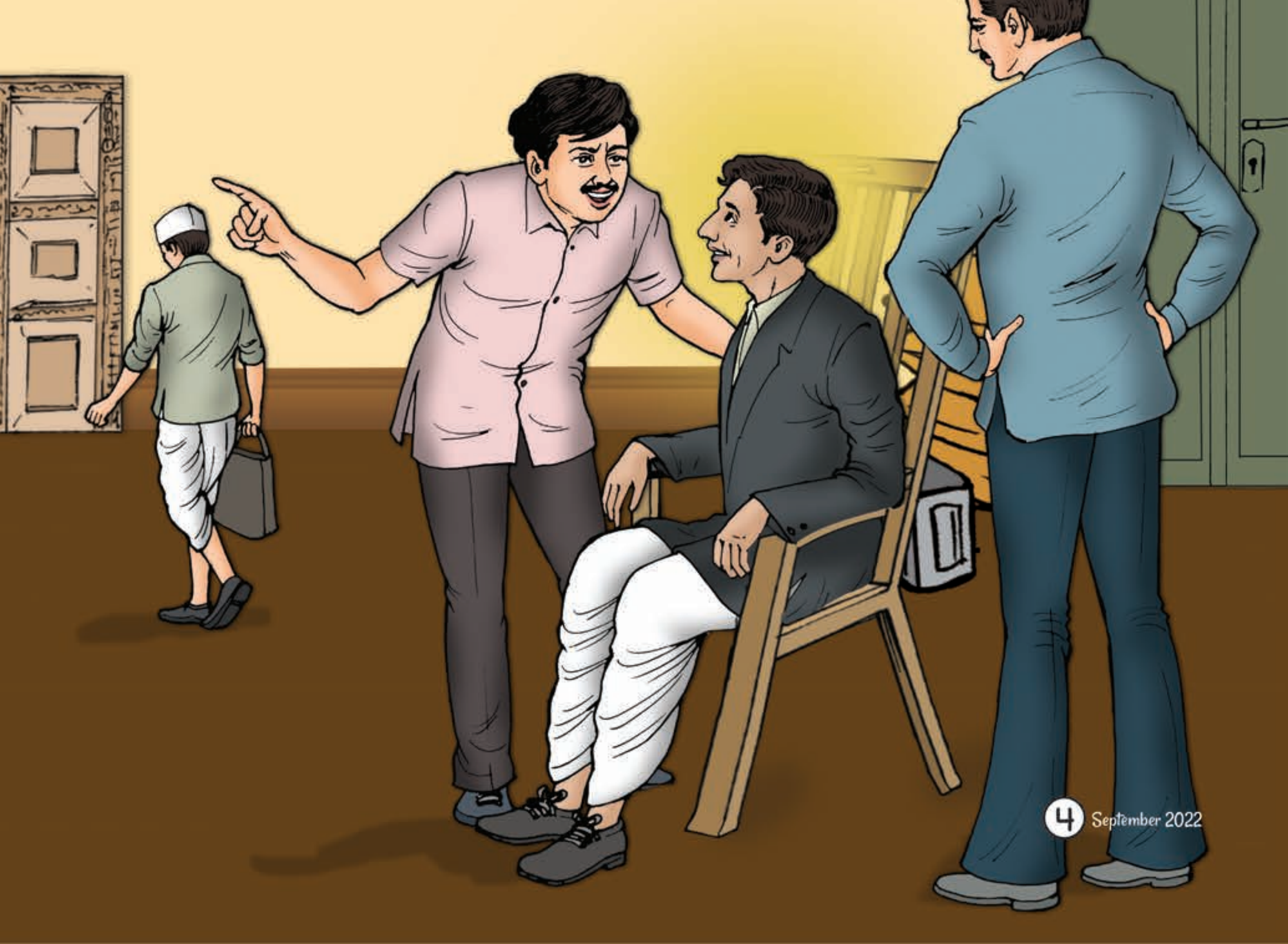

आखिरी चारपाई (पलंग) और आखिरी चौकी

एक बार दादा कामकाज के सिलसिले में अपने तीन भागीदारों के साथ दूसरे शहर गए थे। खाना खाने के बाद सभी भागीदार रूम में जाने के लिए जल्दबाज़ी करते। जानते हो किसलिए? चारपाई रोकने के लिए। जो सबसे पहले रूम में पहुँचता वह टाइट चारपाई ले लेता। दादा के हिस्से सबसे खराब चारपाई आती। दादा उस पर आराम से सो जाते, लेकिन कभी भी चारपाई के लिए दौड़ नहीं लगाते।

नहाने-धोने के लिए भी भागीदार इसी तरह जल्दबाज़ी करते। दादा को सबसे आखिरी में नहाने को मिलता। कुर्सी में भी जो सबसे खराब होती वही दादा के हिस्से में आती! खाना खाते समय थोड़ी टूटी हुई चौकी दादा के हिस्से आती! लेकिन दादा, किसी चीज़ के लिए जल्दबाज़ी करते ही नहीं थे।

इस प्रकार दादाश्री दूसरों के सुख के लिए अपने सुख का विचार भी नहीं करते। खुद परेशानी झेल लेते लेकिन सामने वाले को तकलीफ नहीं होने देते थे।

इटर्नल ट्री

यह कहानी परियों के एक देश की है, जहाँ जादूगर भी रहते थे।

वहाँ विली नाम की एक जादूगरनी रहती थी। एक दिन वह अपने गार्डन में पौधों को पानी दे रही थी।

"ओह, यह पौधा तो बिल्कुल सूख गया है। आबरा का डाबरा... " कहकर उसने अपनी धारदार ऊँगलियों को पौधे पर घुमाया और एक-दो मिनट तक इंतज़ार किया। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ! उसे लगा शायद उसने धीरे से बोला हो। इसलिए उसने एक बार फिर से ज़ोर से कहा।

"स्वर्ग की सौगंध!! क्या हो रहा है?" वह गुस्से में चिल्ला कर बोली।

फेरी स्टेला पंख फड़फड़ाती हुई वहाँ आ पहुँची। वे घबराई हुई थीं। "क्या हुआ विली आन्टी?"

"मेरा जादू!! काम नहीं कर रहा..." विली की आवाज़ में बेचैनी थी।

"ओह... एक मिनट। शायद गोगी, द जीनी, हमारी मदद कर सकेगा...!" उसने अपनी मैजिक स्टिक हवा में लहराई। कुछ हुआ नहीं तो उसने फिर से ऐसा किया। फिर भी कुछ नहीं हुआ!

"अब इस मैज़िक स्टिक को क्या हो गया?" उसने अपनी स्टार आकार की छड़ी को देखते हुए कहा।

"आइडिया... मैं उसे अभी बुलाती हूँ।" कहकर उसने अपनी आँखें बंद करके गोगी को याद किया। थोड़ी ही देर में हवा में ब्लू रंग का धुँआ फैल गया और उसमें से जीनी प्रकट हुआ।

"हलो एवरीवन... क्या बात है? सुबह-सुबह मेरी क्या जरूरत पड़ गई? फ्लश टैंक काम नहीं कर रहा या फिर गैस खत्म हो गई है? कहो, क्या आज्ञा है?" उसने एक ही साँस में पूछ लिया।

"गोगी, अच्छा हुआ तुम आ गए। विली आन्टी का जादू काम नहीं कर रहा है।"

"हमम... देखें तो ज़रा। मुझे आपका हार्ट चेक करने दो। आपकी किडनी और आपके लंग्स भी।" उसने अपना स्टेथोस्कोप निकाला।

"सचमुच, मुझे भी सुबह से अपने पावर में थोड़ी गड़बड़ी लग रही है।" गोगी ने कहा।

"तुम्हें भी?!! मेरी मैजिक स्टिक भी काम नहीं कर रही है। मुझे लगा मुझे नई स्टिक की जरूरत है।" स्टेला ने पलकें झपकाते हुए कहा।

"तब तो मुझे लगता है कि यह चीज़ हमारे कंट्रोल के बाहर है। इसका सॉल्यूशन तो सुपर पावर ही दे सकता है।" विली ने कहा।

"ओ सुपर पावर!!" तीनों ने हाथ जोड़कर सुपर पावर को याद किया।

तुरंत ही आकाश से आवाज़ आई, "हाँ हमें पता है। मैजिकोलॉजी के इतिहास में पहले ऐसा कभी नहीं हुआ है। और यह वोन-वोन टापू पर इटर्नल-ट्री सूखा हुआ दिख रहा है। इसी वजह से आप सभी के मैजिकल पावर चले गए हैं। यदि आप लोग उस ट्री को बचाओगे तो आपको आपके मैजिकल पावर्स वापस मिल जाएँगे।"

"वोन-वोन टापू?" तीनों एक-दूसरे के सामने देखने लगे।

"यह कहाँ है?" स्टेला ने पलकें झपकाते हुए पूछा।

"वोन-वोन टापू स्नो-व्हाइट पर्वत के पास है। जहाँ पर आपको यह इटर्नल-ट्री मिलेगा। दक्षिण की तरफ उड़ान भरो।"

"एक मिनट, हम उस ट्री को किस तरह बचाएँ? कुछ तो बताओ।" गोगी ने पूछा।

उसके लिए एक हिन्ट याद रखना, "इट्स नाट अबाउट यू।" और अचानक आवाज़ बंद हो गई।

तीनों ने यात्रा शुरू की। बहुत देर तक उड़ने के बाद भी पर्वत कहीं दिखाई नहीं दिया। सब थक गए थे। स्टेला ने दूर तक नज़र दौड़ाते हुए कहा, "देखो, वहाँ एक नदी है। वहाँ थोड़ी देर आराम करते हैं।"

तीनों नदी के किनारे उतरे। पानी पीया। थोड़ा आराम करने के बाद सभी फिर से आगे बढ़े। अंत में उन्हें स्नो-व्हाइट पर्वत दिखाई दिया। उसे देखकर तीनों बहुत खुश हुए। उसके पास ही एक ऑलिव ग्रीन समुद्र था।

"वोन-वोन टापू इस समुद्र के बीच होना चाहिए।" गोगी ने कहा।

तभी समुद्र की एक बड़ी सी लहर आई और तीनों को ले जाकर एक टापू पर पटक दिया।

"हम कहाँ हैं?" गोगी ने उठते हुए पूछा।

"सुपर पावर ही जाने !" विली ने थके स्वर में जवाब दिया।

"मुझे बहुत भूख लगी है।" गोगी अपना पेट पकड़ते हुए बोला, "एक जीनी का जीवन भी कितना अजीब होता है। एक छोटे से लैम्प में सिकुड़कर रहना; जो लोग लैम्प रगड़ते हैं उनकी इच्छाओं को पूरा करना। लेकिन वह अपनी भूख का उपाय अपने जादू से नहीं कर सकता!" गोगी की आँखों में उदासी थी।

"तुमको क्या लगता है, हम हमारे जादू का प्रयोग खुद अपने लिए कर सकते हैं?" विली ने कहा।

"सचमुच, दूसरों की इच्छाओं और सपनों को पूरा करते-करते मैं भी थक गई हूँ। मेरे भी कुछ सपने हैं। अब मुझे अपने लिए जीना है।" स्टेला ने कहा।

"अरे, तुम लोग जिनकी इच्छाएँ पूरी करते हो वे लोग तुम्हारा आभार तो मानते हैं। मेरे बारे में सोचो, एक तो ऐसे काले-कलुटे कपड़े पहनो; और लोगों की मदद करो फिर भी कहानियों में तो मैं सिर्फ अपनी चालाकी के लिए ही जानी जाती हूँ। मैं तो इंतज़ार ही कर रही हूँ कि कब मुझे मेरी शक्तियाँ वापस मिले और मैं अपना जीवन बदल दूँ।" विली ने कहा।

"लेकिन हमें अपनी शक्तियाँ मिलेंगी कैसे? हमें तो अभी तक इटर्नल-ट्री भी नहीं मिला है। उस ट्री को बचाएँगे तभी

तो हमें अपनी शक्तियाँ वापस मिलेंगी!" गोगी बोला।

तभी आकाश में बिजली चमकी। डर के मारे तीनों एक गुफा में घुस गए। गुफा के बीचों-बीच मशरूम के आकार का एक सूखा पेड़ दिखाई दिया।

"हे... इटर्नल-ट्री मिल गया!!" तीनों खुशी से झूम उठे।

उन्होंने समुद्र से पानी लेकर सूखे हुए पेड़ में डाला। लेकिन कुछ फर्क नहीं पड़ा।

"स्वर्ग की सौगंध! मैं यह कैसे भूल गई?" विली ने अपनी कमर पर लटका हुआ एक पाउच निकाला और पेड़ की जड़ों में कुछ डाला और कहा "यह एक स्पेशल खाद है।" लेकिन ट्री पर खाद का भी कोई असर नहीं हुआ। तीनों निराश होकर बैठ गए।

तभी उनकी नज़र पेड़ पर बने चिड़िया के घोंसले पर गई। घोंसले में से एक छोटा सा सिर बाहर निकला। वह ची-ची करके अपनी पीड़ा व्यक्त कर रहा था। बच्चा प्यासा था और पत्तों पर गिरी हुई ओस की बूंदों तक पहुँचना चाहता था। लेकिन अभी तक उसके पंख नहीं आए थे।

तुरंत ही गोगी उठ खड़ा हुआ और उसने उस बच्चे को उड़ने की शक्ति प्रदान की। बच्चा फुर्र करके उड़ा और चप-चप करके पानी की बूँदें पी गया। गोगी ने फिर से जादू किया। पत्ते का ग्लास बनाया और उसमें पानी भरकर बच्चे को पिलाया। अचानक इटर्नल-ट्री की शाखा से एक अंकुर फूट निकला।

तीनों चकित रह गए। यह क्या हुआ? ट्री हरा कैसे हो गया? क्या रहस्य है?

स्टेला ने एक पल के लिए सोचा और तुरंत बोल उठी, "ओह, अब समझ में आया! गोगी, तुम्हें पता चला, तुमने अभी क्या किया?"

"क्या? मेरे जादू का उपयोग करके बेचारे प्यासे बच्चे को पानी पिलाया।"

"एक्ज़ेक्टली! दूसरों को हेल्प करने के लिए मैजिकल पावर काम करने लगा और उसी वक्त ट्री में से एक अंकुर फूट निकला।"

"मतलब... तुम कहना क्या चाहती हो?" विली ने पूछा।

"याद है, सुपर पावर ने हमें ट्री को बचाने के लिए क्या हिन्ट दिया था? 'इट्स नाट अबाउट यू।' मतलब कि हमारा मैज़िकल पावर हमारे लिए नहीं है। यह तभी बेस्ट काम करेगा जब हम इसे दिल से दूसरों के लिए इस्तेमाल करेंगे। यह ट्री तभी जीवित रहेगा जब हम अपने पावर का उपयोग दूसरों के लिए करेंगे। समझे ?" स्टेला बोली, "जब से हमने

अपने लिए सोचना शुरू किया तब से हमारी शक्तियाँ घटने लगी और इसके परिणाम-स्वरूप यह इटर्नल-ट्री सूख गया..."

"लेकिन ऐसे पावर्स का क्या मतलब जिससे खुद को ही फायदा न हो?" विली ने तेज़ आवाज में पूछा।

"वही तो, जो खुद का फायदा देखता है वह शॉर्ट बुद्धि कहलाती है, जो सुपर पावर को बिल्कुल भी पसंद नहीं है। जब बच्चा पानी पी रहा था तब मुझे अन्दर गजब का सुख महसूस हो रहा था। ऐसा सुख मैंने पहले भी बहुत बार चखा है। लेकिन जैसे-जैसे मैं सेल्फिश बनता गया, वैसे-वैसे इस सुख का स्वाद भूलता गया। आज फिर से मुझे वह याद आ गया।" गोगी ने अपना अनुभव बताया।

यह बात सुनकर विली को अपने बचपन की एक घटना याद आई, जब उसने अपनी जादुई शक्ति से एक पपी का ऐक्सिडेन्ट होने से बचाया था। उस समय उसे जो सुख मिला था वह स्टॉक में पड़ा था। लेकिन समय के साथ सेल्फिशनेस से ढ़ंक गया था। आज वह बात याद आते ही उसे फिर से उसी आनंद का अनुभव होने लगा। वह बोली, "यस, यू आर राइट गोगी। सिर्फ खुद के बारे में सोचने में कोई सुख नही है। दूसरों की हेल्प करने में ही असली सुख और फायदा है।"

"बड़े घर में रहने का सुख भी इस सुख के सामने फीका लगता है।" गोगी को अपना चिराग याद आया।

"जब हम लोगों के सपने पूरे करते हैं तब उन्हें जो खुशी मिलती है, उसे देखकर हमें उनसे भी अधिक खुशी का अनुभव होता है। ऐसा आनंद मुझे आज तक किसी और तरीके से नहीं मिला है।" स्टेला बोली।

सबने देखा कि इटर्नल-ट्री पूरी तरह से हरा हो गया । स्टेला की मैज़िक स्टिक से फिर से प्रकाश निकलने लगा। अब वह भी काम करने लगी थी।

"आबरा का डाबरा.... फ्लाइंग ब्रूम (झाड़ू) हमें घर ले जाओ...." ब्रूम विली के पास आकर खड़ा हो गया। विली के पावर्स भी वापस आ गए।

एक नई समझ के साथ नई उड़ान भरकर तीनों अपने घर लौट गए!

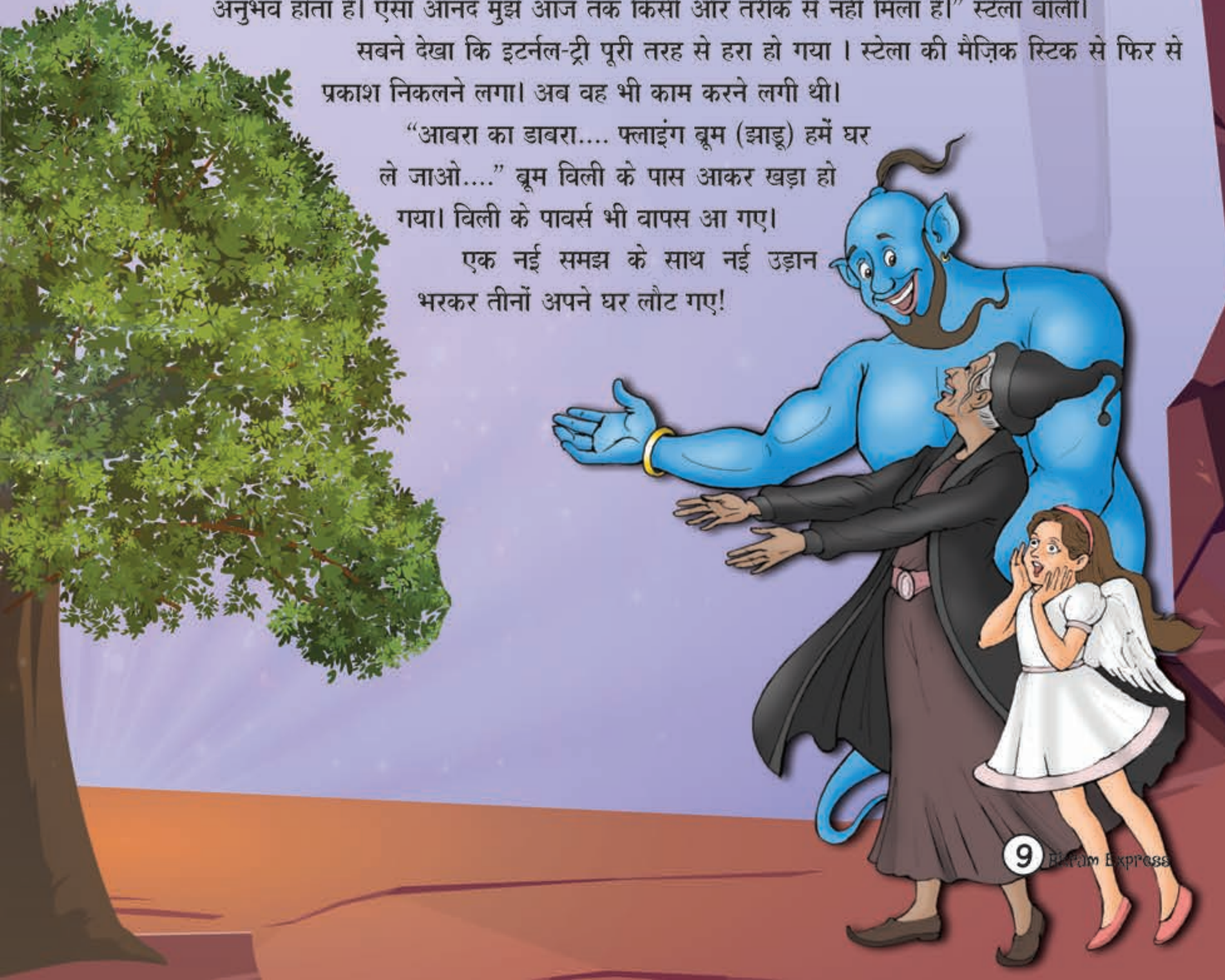

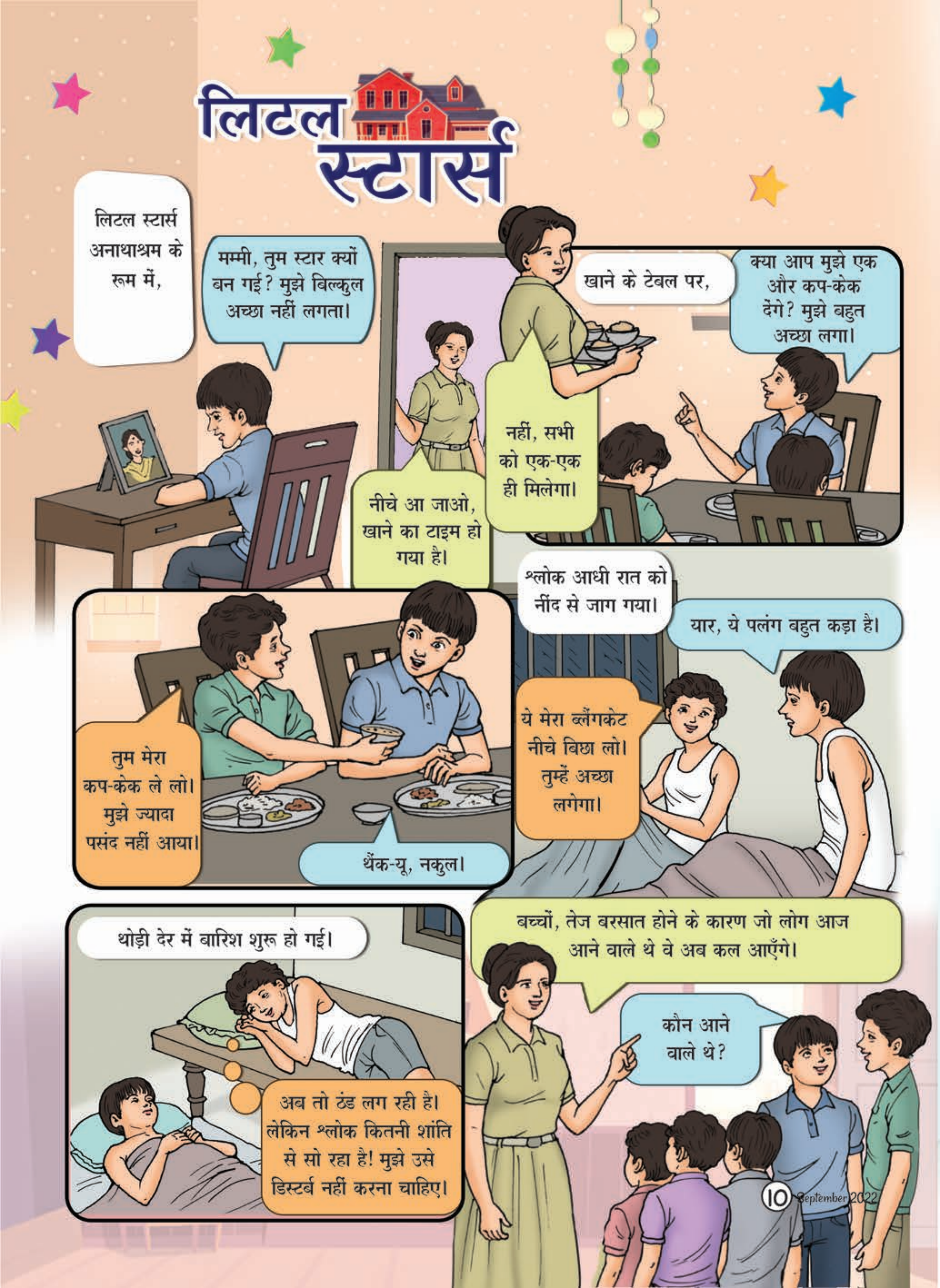
लिटल स्टार्स
लिटल स्टार्स अनाथाश्रम के रूम में,
मम्मी, तुम स्टार क्यों बन गई? मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।
नीचे आ जाओ, खाने का टाइम हो गया है।
खाने के टेबल पर,
क्या आप मुझे एक और कप-केक देंगे? मुझे बहुत अच्छा लगा।
नहीं, सभी को एक-एक ही मिलेगा।
तुम मेरा कप-केक ले लो। मुझे ज्यादा पसंद नहीं आया।
थैंक-यू, नकुल।
श्लोक आधी रात को नींद से जाग गया।
यार, ये पलंग बहुत कड़ा है।
ये मेरा ब्लैंकेट नीचे बिछा लो। तुम्हें अच्छा लगेगा।
थोड़ी देर में बारिश शुरू हो गई।
अब तो ठंड लग रही है। लेकिन श्लोक कितनी शांति से सो रहा है! मुझे उसे डिस्टर्ब नहीं करना चाहिए।
बच्चों, तेज बरसात होने के कारण जो लोग आज आने वाले थे वे अब कल आएँगे।
कौन आने वाले थे?

हर रविवार को एक फैमिली आती है और किसी भी एक बच्चे को पसंद कर के हमेशा के लिए उसे अपने घर ले जाते हैं।
क्या सच में?! मतलब मुझे भी एक फैमिली मिल सकती है?!
हाँ, मिल सकती है।
तीसरे दिन,
हम यश के मम्मी-डैडी बनना चाहते हैं।
श्योर! यश इज़ ए वेरी गुड चाइल्ड।
स्टडी रूम में,
मम्मी, मैं आज सिलेक्ट नहीं हुआ।
यश को कितनी अच्छी फैमिली मिली है! सो हैपी फॉर हिम।
नकुल, तुम हमेशा दूसरों की खुशी में कैसे खुश रह सकते हो?
डैडी ने अंतिम सांस लेते हुए जो कहा था उस कारण।
दुनिया में भले लोग बहुत हैं। अगर तुम्हें नहीं मिले तो तुम दूसरों के लिए भले बन जाना।
एक दिन गार्डन में...
श्लोक, यह देखो कितना इन्टरेस्टिंग है!
श्लोक पानी का नल खुला छोड़कर नकुल के पास भागा।

थोड़ी देर बाद,
यह क्या? इतना सारा पानी किसने वेस्ट किया?
सॉरी मैम। मुझसे नल खुला रह गया।
ओह नो! मुझसे नल खुला रह गया था! अब क्या करूँ?
तुम्हें पता भी है कितना पानी वेस्ट हो गया? आज तुम्हें डेज़र्ट नहीं मिलेगा।
मेट्रन के जाने के बाद,
तुम्हें क्या ज़रूरत थी मुझे बचाने की?
रिलैक्स, व्हाट आर फ्रेन्ड्स फॉर?
रविवार का दिन था। एक फैमिली को श्लोक पसंद आ गया।
कितना प्यारा है ! लेट्स टेक हिम होम।
तभी श्लोक ने एक लड़के को धक्का मारा,
ऐ, क्या कर रहे हो? कान्ट यू सी? दिखाई नहीं देता?
धक्का ही तो लगा है ना! इसमें इतना क्यों चिढ़ रहे हो?

हर बार की तरह नकुल ने फिर से श्लोक को बचाया।
रिलैक्स यार, सॉरी! श्लोक जमीन पर पड़े कीड़े को बचाने गया और उसमें तुम्हें भूल से धक्का लग गया।
श्लोक के गुस्से और नकुल के अच्छे मेनर्स को देखकर फैमिली ने नकुल को पसंद किया।
तुमने जानबुझकर ऐसा किया न! क्यों किया?
दुनिया में भले लोग बहुत हैं। मुझे तो ऐसा कुछ मिल गया है और तुझे?
मुझे भी!
ऐसा कहकर नकुल ने श्लोक को गले लगा लिया।

मीठी यादें १

एक बार मुंबई के एक ब्रह्मचारी भाई को लगातार तीन दिन पूज्यश्री की सेवा में उनके साथ रहने का मौका मिला। महात्मा बहनों ने उन भाई से कहा कि वे सुबह सात बजे गरम नाश्ता देकर जाएँगी। आठ बजे तक पूज्यश्री के लिए मसाला दूध तैयार करके गरम नाश्ता परोसने की जिम्मेदारी उन भाई को सौंपी गई।

सुबह हुई। भाई को पूज्यश्री का 'जय सच्चिदानंद' सुनाई दिया। पूज्यश्री को 'जय सच्चिदानंद' कहने से पहले भाई की नज़र घड़ी पर पड़ी। देखा तो आठ बज गए थे। पूज्यश्री ने भाई से कहा, "मसाला दूध बना दिया है। नाश्ता भी रेडी है। तुम ब्रश कर के आ जाओ फिर हम साथ में नाश्ता करेंगे।"

उस रात भाई ने तय किया, "ऐसा नहीं चलेगा। कल मैं जल्दी उठकर मसाला दूध बनाऊँगा और फ्रूट भी काट दूँगा।" दूसरे दिन फिर से ऐसा ही हुआ। भाई जल्दी नहीं उठ पाए और पूज्यश्री ने ही सबकुछ रेडी कर दिया।

आखिरी दिन था। फिर से निश्चय करके भाई सो गए। लेकिन रोज़ की तरह उस दिन भी भाई जल्दी नहीं उठ पाए। पूज्यश्री ने मसाला दूध तैयार किया, फ्रूट काटे और गरम नाश्ता परोसा। वैसे तो ब्रह्मचारी भाई पूज्यश्री की सेवा में थे, पर हुआ ठीक उसका उलटा।

पूज्यश्री की कैसी गजब की विशालता कि लगातार तीन दिनों तक उन्होंने सभी काम किए लेकिन एक बार भी उन भाई को टोका नहीं। उन भाई को बिल्कुल भी परेशानी या तकलीफ न हो उस तरीके से स्वयं एडजस्टमेन्ट ले लिया।

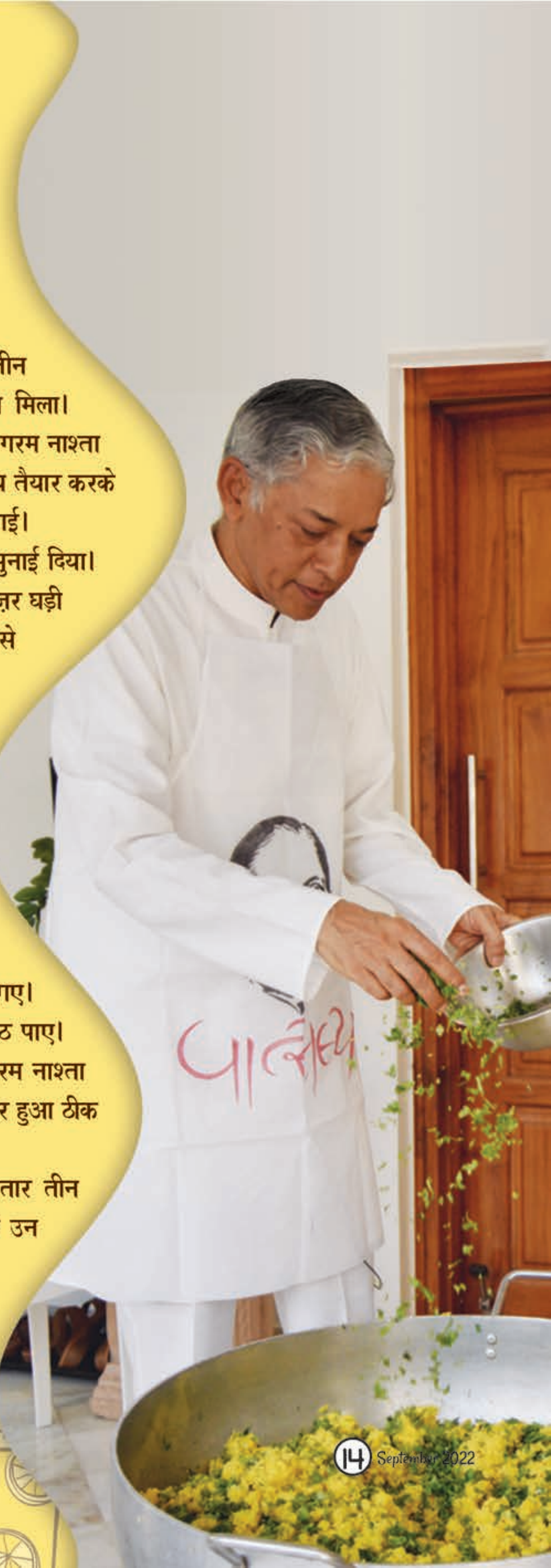

मीठी यादें २

एक बार नीरू माँ के साथ लंदन में गुरुपूर्णिमा उत्सव बहुत धूमधाम से सेलिब्रेट किया गया। कुछ दिनों बाद, वे इंडिया वापिस आए तो एक गाँव में सत्संग का आयोजन किया गया। नीरू माँ की सेवा में एक आप्तपुत्री बहन थीं। उन्होंने नीरू माँ से पूछा, "आप कुछ दिनों पहले लंदन में आलीशान बंगले में क्वीन की तरह रहते थे और अब इस तरह गाँव में रहना पड़ रहा है। यहाँ खाने में दूध-रोटी मिलती है और घर में टॉइलेट भी नहीं है। रात को टॉइलेट जाने के लिए टार्च की लाइट का उपयोग करना पड़ता है। तो आपको कुछ नहीं होता नीरू माँ?"

नीरू माँ ने कहा, "मैं क्या यह सब देखती हूँ? मैं तो महात्माओं का भाव देखती हूँ। मुझे बाहर की परिस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ता है।"

तबीयत के कारण नीरू माँ को मीठा खाना अनुकूल नहीं था। लेकिन कभी-कभी सब्जियों में मीठा डाला होता। पर महात्माओं ने प्रेम से बनाई होती इसलिए नीरू माँ एक चम्मच चख लेते। कभी किसी का दिल नहीं तोड़ते।

नीरू माँ ने कभी भी खुद के बारे में सोचा ही नहीं। किस तरह लोगों को सुख मिले यही उनकी भावना रहती। नीरू माँ के लिए अपनी तबीयत लास्ट प्रायोरिटी थी। जगत् कल्याण के लिए वे सभी जगह जाते। सत्संग के लिए नीरू माँ ने अनरिज़र्व्ड टिकट से ट्रेन में जमीन पर अखबार बिछाकर भी ट्रैवल किया है।

एक बार नीरू माँ आप्तपुत्र भाईयों और आप्तपुत्री बहनों को यात्रा करने ले गए थे। लेकिन वहाँ जाने के बाद नीरू माँ की तबीयत बिगड़ गई। तबीयत खराब होने के बावजूद भी नीरू माँ सबके साथ बैठकर बातें करते। चाहते तो नीरू माँ अडालज जल्दी रिटर्न हो सकते थे। लेकिन भाईयों और बहनों की खुशी के लिए वे उनके साथ रहे और उनके साथ ही वापस आए।

दादाश्री के साथ नीरू माँ यू.एस.ए. सत्संग के लिए जाते, तब महात्माओं को नीरू माँ की सादगी बहुत टच कर जाती थी। यू.एस.ए. में विशेष चीज़ें मिलती पर नीरू माँ ने कभी भी अपने लिए कुछ भी नहीं माँगा। ऊपर से अपनी चीज़ें वे महात्माओं को दे देते थे।

अपना भयंकर अपमान करने वालों का भी नीरू माँ ने सिर्फ भला ही किया है। इस तरह नीरू माँ ने अपना सर्वस्व अर्पण करके एक अगरबत्ती की तरह जहाँ गए वहाँ सिर्फ सुख की सुगंध फैलाई!

ऐतिहासिक गौरवगाथा

जिस दिन श्रीराम का राज्याभिषेक होने वाला था, उसके अगले दिन रात को रानी कैकेयी ने महाराज दशरथ से अपने पुत्र भरत के लिए वरदान के रूप में अयोध्या का राजसिंहासन और श्रीराम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा। वर्षो पहले रानी कैकेयी को दिया हुआ वरदान महाराज दशरथ को इस तरह कबूल करना पड़ा।

लेकिन राजकुमार भरत किसी भी तरह राजसिंहासन स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। जब अयोध्यावासी राजकुमार भरत के राज्याभिषेक के लिए एकत्रित हुए तब भरत ने उनसे कहा कि "सिर्फ मेरे बड़े भाई श्रीराम ही इस सिंहासन पर शोभा देते हैं, भरत नहीं।"

अपने भाई को याद करके राजकुमार भरत बहुत दुःखी हुए। उन्होंने सोचा, 'आज मैं यहाँ राजमहल की राजसभा में आराम से हूँ और वहाँ श्रीराम और माता सीता जंगलों में ऊबड़-खाबड़ रास्तों में नंगे पाँव चल रहे होंगे। अयोध्या के राजमहल में राज परिवार बत्तीस तरह के व्यंजन खा रहा है, जबकि राम और सीता को कैसा खाना मिल रहा होगा! घने जंगल में जो फल मिलते होंगे, वही खाते होंगे।'

भरत की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने अपने सामने खड़े हुए प्रजाजनों से कहा, "कल मैं चित्रकूट जाऊँगा और श्रीराम को अयोध्या के राजसिंहासन पर बैठने के लिए विनती करूँगा। राम अयोध्या में वापिस पधारें और सिंहासन पर बिराजें, मेरी यह भावना सफल हो ऐसा आशीर्वाद चाहता हूँ।"

एक नगरवासी ने पूछा, "चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करने वाले राम आपके कहने पर वापिस नहीं आए तो क्या होगा? रानी कैकेयी के पुत्र होने के कारण यदि आपकी बात का अनादर किया तो?"

भरत ने कहा, "जब राम के साथ बचपन में मैं कई तरह के खेल खेलता था तब उन्होंने मुझे कभी नाराज़ नहीं किया। मुझे हमेशा जीतने दिया। वे हमेशा मुझे खुश रखते। मेरे प्रति उन्हें अतिशय प्रेम है। उस प्रेम का वास्ता देकर मैं राम को अयोध्या वापिस लेकर आऊँगा। यह राज्य मेरा नहीं श्रीराम का है। मैं तो उनका सेवक हूँ। मुझे किसी संपत्ति या राजसिंहासन की ज़रूरत नहीं है।"

प्रजा ने प्रसन्न होकर कहा, "हे भरत, आपको राज्य प्राप्त होने के बावजूद उसके लोभ में आने के बजाय आप अपने बड़े भाई को राज्य देना चाहते हैं, यही आपके हृदय की विशालता को दर्शाता है।"

राजकुमार भरत के साथ प्रजा के लोग भी श्रीराम के दर्शन के लिए चित्रकूट जाने के लिए तैयार हो गए। साथ में माता कौशल्या, माता सुमित्रा और पश्चाताप की आग में जल रहीं माता कैकेयी भी रथ में बैठकर राम

से मिलने के लिए निकल पड़े। माता कैकेयी को अपने आचरण पर बेहद पछतावा था। जिस भरत के लिए उन्होंने यह काम किया था, उस काम से भरत स्वयं बहुत दुःखी हो गए थे। माता कैकेयी को समझ में आ गया कि उनसे बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है!

माता कौशल्या श्रीराम के प्रति कैकेयी के प्रेम को जानती थीं। इसलिए वे कैकेयी के पश्चाताप को समझ गईं। तीनों रानियों को एक साथ रथ में देखकर नगरवासियों को विचार आया, "हृदय की विशालता टूटे हुए दिलों को भी जोड़ सकती है। सामान्य जीव छोटी-छोटी बातों के लिए भी एक-दूसरे के प्रति गुस्सा और आक्रोश रखते हैं, जबकि रघुवंश की इन रानियों का हृदय कितना विशाल है कि अपने पुत्र को ऐसी विषम परिस्थिति में डालने वाले के लिए भी बिल्कुल वैरभाव नहीं है। बल्कि उतने ही प्रेम और स्नेह के साथ रहती हैं।"

और इस तरह, राम के दर्शन के लिए आतुर राज परिवार और प्रजा के लोगों ने चित्रकूट की ओर प्रस्थान किया।

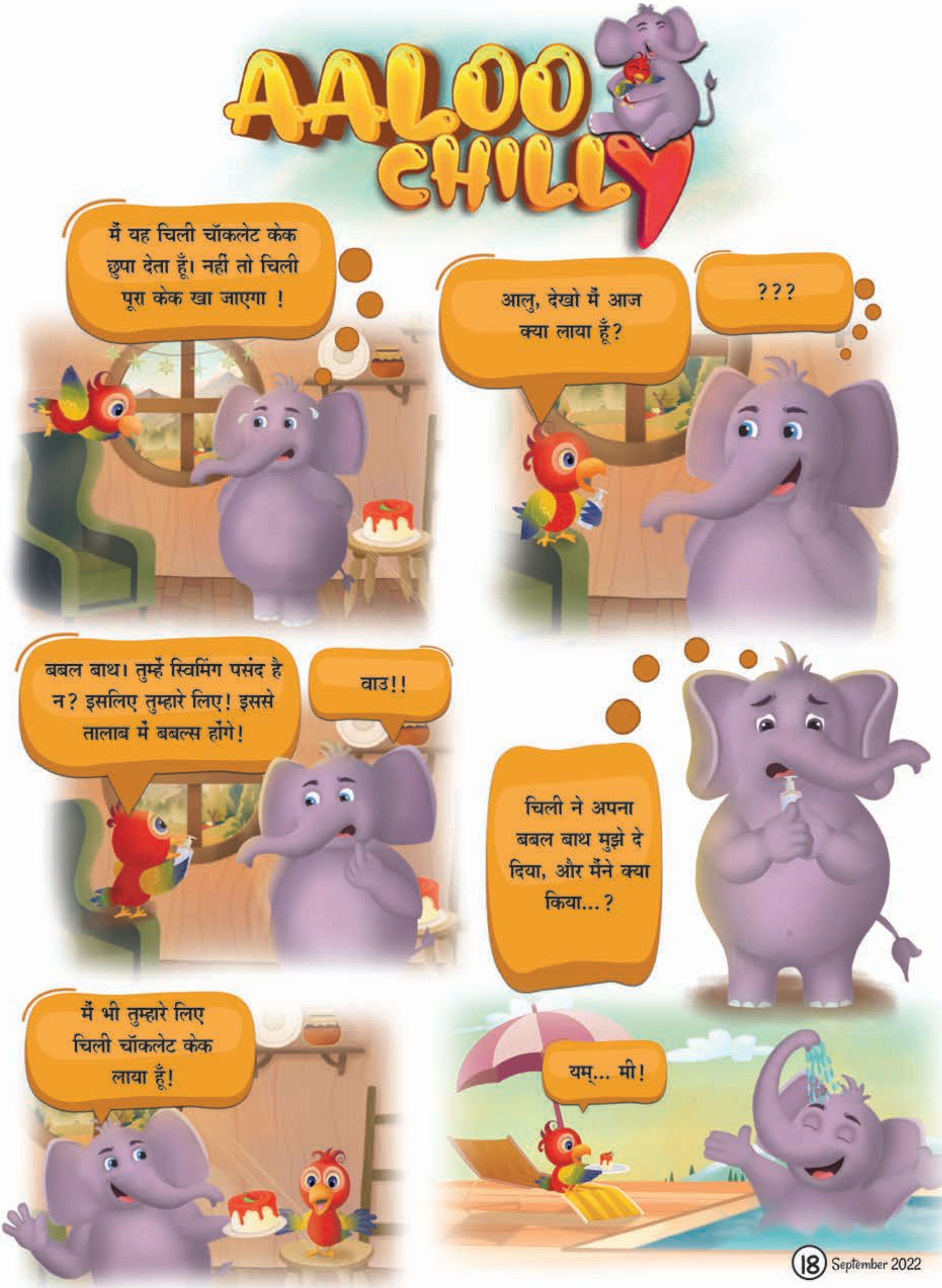
AALOO CHILLY
मैं यह चिली चॉकलेट केक छुपा देता हूँ। नहीं तो चिली पूरा केक खा जाएगा !
आलु, देखो मैं आज क्या लाया हूँ?
???
बबल बाथ। तुम्हें स्विमिंग पसंद है न? इसलिए तुम्हारे लिए! इससे तालाब में बबल्स होंगे!
वाउ!!
चिली ने अपना बबल बाथ मुझे दे दिया, और मैंने क्या किया...?
मैं भी तुम्हारे लिए चिली चॉकलेट केक लाया हूँ!
यम्... मी!

चलो खेलें...

1. चित्र में से सब्जी पहचानकर उसका नाम दिए गए कोलम में ढूँढो।

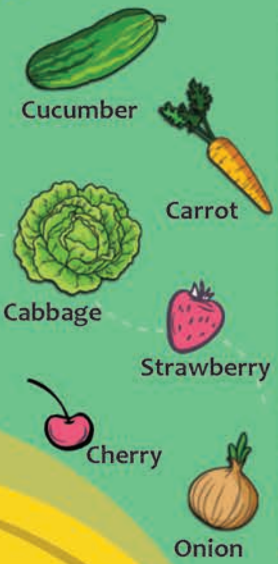

Z	E	C	C	A	R	R	O	T	H	O
U	I	O	N	R	C	B	R	Y	U	N
C	R	U	B	R	B	E	E	L	E	I
N	H	I	N	I	T	E	B	K	E	O
P	E	P	B	T	D	T	M	A	P	N
O	O	P	K	C	U	C	U	N	A	B
T	A	T	O	G	A	B	C	I	T	A
C	H	I	A	E	S	E	U	B	I	G
E	G	A	B	T	A	C	C	A	S	O
C	B	E	P	K	O	H	L	R	O	N
A	B	B	A	C	A	B	B	A	G	E

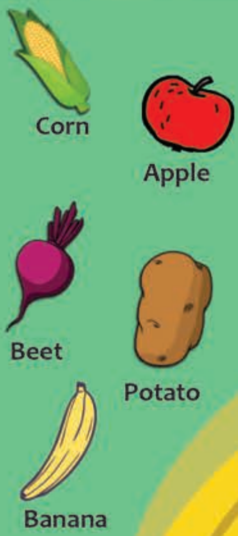

2. दिए गए चित्र में से ८ अन्तर ढूँढो।

Akram Express
September 2022
Year : 10, Issue : 6
Conti. Issue No.: 114

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

अडालज त्रिमंदिर में जन्माष्टमी महोत्सव
पूज्यश्री की हाज़िरी में मनाया गया
जिसकी एक झलक...

मटकी फोड़ना

कल्चरल शो

पपेट शो

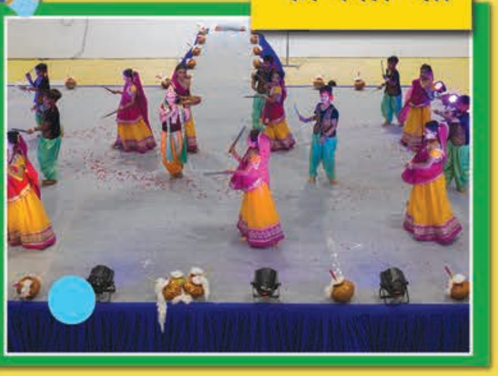

Answers of Puzzle 1

Z	E	C	C	A	R	R	O	T	H	O
U	I	O	N	R	C	B	R	Y	U	N
C	R	U	B	R	B	E	E	L	E	I
N	H	I	N	I	T	E	B	K	E	O
P	E	P	B	T	D	T	M	A	P	N
O	O	P	K	C	U	C	U	N	A	B
T	A	T	O	G	A	B	C	I	T	A
C	H	I	A	E	S	E	U	B	I	G
E	G	A	B	T	A	C	C	A	S	O
C	B	E	P	K	O	H	L	R	O	N
A	B	B	A	C	A	B	B	A	G	E

Answers of Puzzle 2

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025